Business Organisation

B.com I Year

BULANDSHAHR

★ व्यवसाय का अर्थ (Meaning of Business) :-

व्यवसाय एक आर्थिक क्रिया है। इसके विभिन्न रूपों का हमारे दैनिक जीवन एवं आर्थिक प्रणाली से इतना सीधा और घनिष्ठ सम्बन्ध है कि सम्भवतः शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो इससे परिचित न होगा।

प्रो० एच हैने के अनुसार, "व्यवसाय से तात्पर्य उस मानवीय क्रिया से है जो क्रय-विक्रय द्वारा धनोत्पत्ति या धनार्जन के लिए की जाती है।"

मैलविन एन्सन के अनुसार, "व्यवसाय जीविकोपार्जन का एक माध्यम है।"

★ व्यवसाय की विशेषताएँ या लक्षण →

1.) आर्थिक क्रिया (Economic Activity) → आर्थिक क्रियाओं से आशय वस्तुओं व सेवाओं के आदान-प्रदान द्वारा धन प्राप्ति से है।

2. विक्रय अथवा विनिमय (Sale or Exchange) → व्यवसाय कहलाने के लिए किसी कार्य में विक्रय अथवा विनिमय का होना परम आवश्यक है। इसीलिए व्यक्तिगत उपभोग के लिए या भेंट स्वरूप देने के लिए किया गया उत्पादन और निःशुल्क सेवा व्यवसाय नहीं कहे जा सकते।

3. लेन-देन में नियमितता (Regularity of Dealings) - वस्तुओं और सेवाओं के उसी विनिमय को व्यवसाय की संज्ञा दी जा सकती है जो नियमित रूप से अर्थात निरन्तर होता रहता है।

4. लाभ का उद्देश्य (Profit Motive) → प्रत्येक व्यवसाय का उद्देश्य लाभ कमाना होता है।

5. जोखिम एवं भावी सफलता (Risk and future success) → व्यवसाय जोखिम का खेल है। हाँ, इतना अवश्य है कि कुछ व्यवसायों में जोखिम अधिक होता है और कुछ में कम किन्तु सभी व्यवसायों में कुछ-न-कुछ जोखिम आवश्यक ही होता है।

6. समाज की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि (Satisfaction of Social Needs) - व्यवसाय केवल किसी व्यक्ति विशेष की आवश्यकताओं की ही सन्तुष्टि नहीं करता, अपितु इसके द्वारा पूरे समाज की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि होती है।

7. वैधानिकता (Legality) → व्यवसाय की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएँ यह भी है कि व्यवसाय के अन्तर्गत की जाने वाली मानवीय क्रिया सम्बन्धित देश के प्रचलित विधान के अनुसार वैधानिक होनी चाहिए।

8. पारस्परिक लाभ एवं सन्तुष्टि (Mutual Benefit and Satisfaction) - व्यवसाय का एक तत्व यह भी है कि उसकी क्रियाओं के द्वारा दोनों पक्षकारों को पारस्परिक लाभ एवं संतुष्टि

प्राप्त होती हो, तभी उसे व्यवसाय कहेंगे अन्यथा नहीं।

9. उपयोगिता का सृजन (Creation of Utility) → व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण लक्षण व्यवसायी द्वारा वस्तुओं की उपयोगिता का सृजन करना है। ये उपयोगिता विभिन्न प्रकार की होती है जैसे - समय उपयोगिता, रूप उपयोगिता, स्थान उपयोगिता आदि।

★ व्यवसाय के कार्य (Functions of Business)

1. तकनीकी कार्य (Technical Activities) - तकनीकी क्रियाएँ, जो व्यवसाय का प्रमुख अंग है, निर्माण तथा अभियन्त्रीकरण से सम्बन्धित होते है।

2. वाणिज्यिक कार्य (Commercial Activities) → इन क्रियाओं का सम्बन्ध वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय अथवा वितरण से है। वाणिज्यिक क्रियाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

क) क्रय सम्बन्धी कार्य (Purchasing Activities)
ख) विक्रय सम्बन्धी कार्य (Selling Activities)

3. वित्तीय क्रियाएँ (Financial Activities) - प्रत्येक व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए उचित समय पर पूँजी की उचित मात्रा का होना आवश्यक है। अतिपूँजीकरण तथा अल्पपूँजीकरण दोनों व्यवसाय के लिए घातक है।

4. कर्मचारी सम्बन्धी कार्य (Personnel Activities) - किसी व्यवसाय की सफलता उसके कर्मचारियों की व्यक्तिगत कुशलता एवं सन्तुष्टि पर निर्भर करती है। अतः व्यवसायी तथा कर्मचारियों के बीच सहयोगपूर्ण सम्बन्धों का होना आवश्यक है।

5. कार्यालय सम्बन्धी कार्य (Office Activities) → कार्यालय प्रबन्ध व्यवसायिक संगठन का एक अनिवार्य अंग है। आधुनिक युग में पत्र-व्यवहार, नत्थीकरण, रिकार्ड, लिपिकरण आदि का कार्य बहुत बढ़ गया है।

6. लेखांकन सम्बन्धी कार्य (Accounting Activities) → व्यावसायिक लेन-देनों का समुचित हिसाब-किताब रखना न केवल कानूनन अनिवार्य है बल्कि उपयोगी भी है। इसलिए प्रायः प्रत्येक बड़े उपक्रम में एक पृथक लेखा-विभाग होता है जो समस्त व्यावसायिक कार्यों का लेखा-जोखा रखता है।

★ व्यवसाय का महत्व (Importance of Business)

1. तीव्र एवं सन्तुलित आर्थिक विकास।
2. जीवन स्तर में सुधार।
3. विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण।

* वाणिज्य [Commerce] :- वाणिज्य औद्योगिक जगत के सदस्यो के मध्य वस्तुओ के आदान-प्रदान के लिए एक संगठित प्रणाली है।

BULANDSHAHR

वाणिज्य = व्यापार + व्यापार मे सहायता (सहायक सेवाएँ)

* वाणिज्य के घटक [Components of commerce] :- वे सभी गतिविधियाँ जो वस्तुओ एव सेवाओ को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति या एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करनी की दिशा मे केन्द्रीत है, वाणिज्य मे शामिल होती है। व्यापार तथा व्यापार के लिए सहायक वाणिज्य के दो प्रमुख घटक है -

1. व्यापार [Trade] :- व्यापार वस्तुओ एव सेवाओ को क्रय एव विक्रय करने की एक गतिविधि है।

2. व्यापार मे सहायता [Aids to Trade] :- व्यापार मे सहायक या सहायता सभी गतिविधियाँ शामिल है जो निर्माताओ से उपभोक्ताओ तक वस्तुओ के प्रवाह को सुगम बनाती है।

* व्यावसायिक संगठन [Business organisation] :- "व्यावसायिक संगठन उन व्यक्तियो की आर्थिक व्यवस्था है जहाँ सभी प्रयासो को सामान्य आर्थिक लक्ष्य प्राप्त करने हेतु निर्देशित किया जाता है।"

* व्यावसायिक संगठन की विशेषताएँ [Characteristics of Business organisation] :-

1. पूँजी की पर्याप्तता [Adequacy of Capital] - पूँजी की पर्याप्तता अच्छे व्यवसायिक संगठनो की मुख्य विशेषता है।

2. देयता की सीमा [Limit of Liability] - किसी भी व्यावसायिक संगठन के पास दो प्रकार के दायित्व उपलब्ध होते है, अर्थात सीमित और असीमित दायित्व। जोखिमो से बचने के लिए सामान्यत: सीमित देयता को प्राथमिकता दी जाती है।

(i) विनिर्माण उद्योग (Manufacturing Industries) :- ये उद्योग कच्चे माल या अर्द्ध निर्मित वस्तुओं के निर्माण एवं उपभोक्ता वस्तुओं में परिवर्तित करने के लिए उत्तरदायी होते हैं। उदाहरण - कपास को वस्त्र में परिवर्तित किया जाना। ये उद्योग निम्न प्रकारों में अनुसरण कर सकते हैं -

a) विश्लेषणात्मक [Analytical]
b) कृत्रिम [Synthetic]
c) प्रसंस्करण [Processing]
d) संकलन रेखा [Assembly Line]

ii) निर्माण उद्योग [Construction industries] :- ये उद्योग पुलों, भवनों, सड़क, मार्गों, बान्धों तथा अन्य प्रमुख निर्माणों के निर्माण में शामिल है। वे प्राथमिक उद्योगों के उत्पादों को स्वयं के कच्चे माल के रूप में उपयोग करते हैं तथा उन्हें विशेष उत्पादों में परिवर्तित में परिवर्तित कर देते हैं। उदाहरण - सीमेंट, लोहा तथा इस्पात आदि।

3. तृतीयक उद्योग [Tertiary industries] :- ये वे उद्योग है जो उपभोक्ताओं को प्रत्यक्ष रूप से सेवाएँ प्रदान करते हैं। इन सेवाओं में वाणिज्यिक सेवाएँ जैसे - बैंकिंग, परिवहन, बीमा आदि।

★ उद्योग के कार्य [Functions of Industries]

1. अन्य क्षेत्रों में प्रगति को प्रोत्साहित करना।
2. श्रम विभाजन को प्रोत्साहित करना।
3. आर्थिक स्थिरता।
4. भुगतान संतुलन में सुधार।
5. तकनीकी प्रगति।
6. विपणनों का विकास।
7. सुरक्षा के लिए प्रावधान।

बहुत से विकल्प प्रस्तुत है। क्रेता बाजार मे ग्राहक को सदैव सही समझा जाता है और उसकी स्थिति बाजार मे राजा के समान होती है।
"लाभ कमाना व्यवसाय का उद्देश्य नही है, बल्कि इसका उद्देश्य सामाजिक हित एवं आवश्यकता की पुर्ति करना है,"

3. मानवीय उद्देश्य (Human activities) → आधुनिक युग मे व्यवसाय न केवल लाभ कमाने का तन्त्र मात्र ही नही है बल्कि सामाजिक सन्तोष प्रदान करने तथा मानवीय सम्बन्धो मे मधुरता, न्याय एवं स्थिरता लाने का एक महत्वपुर्ण साधन है। व्यवसाय अन्ततः व्यक्तियो का एक संगठन है अतः इन सभी की सन्तुष्टि होना परम आवश्यक है।

* उद्योग (Industry) :- उद्योग से तात्पर्य सामूहिक रूप से उत्पादक उद्योगो का निर्माण करना है जो विशेष रूप से कृषि से भिन्न होता है।
उदहारण - वाहनो के निर्माण मे शामिल विभिन्न व्यावसायिक इकाइयाँ।

उद्योगो के प्रकार (Types of Industries) -

1. प्राथमिक उद्योग (Primary industry) → ये वे उद्योग है जो प्राकृतिक संसाधनो जैसे - तेल खनिज, कृषि उत्पादो आदि के निष्कर्षण, उत्पादन, प्रसंस्करण तथा संचालन की व्यावसायिक गतिविधियो मे सामान्यतः शामिल होते है। ये उद्योग निम्न रूप मे वर्गीकृत किया गया है -

a) निष्कर्षण उद्योग (extractive Industries) - ये उद्योग प्राकृतिक संसाधनो के निष्कर्षण की प्रक्रिया मे शामिल होते है। जैसे - मछली पकडने के उद्योग, खनन उद्योग, वन उद्योग आदि शामिल है।

b) आनुवांशिक उद्योग (Genetic Industries) :- ये उद्योग बिक्री के उद्देश्य से जानवरो और पक्षियो के प्रजनन या पालन-पोषण तथा पौधो के पोषण की प्रक्रिया मे शामिल होते है। जैसे - डेयरी फार्मिंग, मुर्गी पालन, बागवानी, मछली प्रजनन आदि।

2. द्वितीयक उद्योग (Secondary Industries) :- वे उद्योग जो प्राथमिक उद्योगो द्वारा उत्पादित वस्तुओ के निर्माण एवं प्रसंस्करण मे शामिल होते है, उन्हे द्वितीयक उद्योग के रूप मे जाना जाता है। ये उद्योग निम्न रूप मे वर्गीकृत किया गया है -

4. प्राकृतिक साधनो का उचित विदोहन।
5. राजस्व मे वृद्धि।
6. मानवीय संसाधनो का अधिकतम उपयोग।
7. उन्नत अर्थव्यवस्था की आधारशिला।
8. पूँजी बाजारो का विकास

* व्यवसाय के उद्देश्य (Objectives of Business)
व्यवसाय के उद्देश्यो को आर्थिक, सामाजिक तथा मानवीय तीन खण्डो मे विभक्त किया जा सकता है।

1. आर्थिक उद्देश्य (Economic objectives) - व्यवसाय के आर्थिक उद्देश्य से तात्पर्य है कि व्यवसायी को लाभ कमाने या लाभो को अधिकतम करने के लिए ही व्यावसायिक क्रिया करनी चाहियें। व्यवसाय के विभिन्न उद्देश्यो मे आर्थिक उद्देश्य सर्वोपरि है। किसी व्यवसाय के आर्थिक उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते है-

a) लाभ कमाना।
b) व्यवसाय का विकास करना (नव-प्रवर्तन अथवा नवाचार)।
c) ग्राहको का सृजन करना।
d) विनियोगो पर प्रतिफल या प्रत्याय।
e) व्यवसाय की प्रतिष्ठा एंव मान्यता का प्रतीक।
f) व्यवसाय को जीवित रखने के लिए।
g) कुशलता एंव सफलता का मापदण्ड।

2. सामाजिक उद्देश्य (Social objectives) → व्यवसाय का एकमात्र उद्देश्य लाभ कमाना ही नही होता। अर्थव्यवस्था मे एकाधिकार के समाप्त होने और प्रतियोगिता उत्पन्न होने के फलस्वरूप बाजार का स्वरूप बदल गया है। आज सम्पूर्ण विश्व मे 'विक्रेता बाजार' की अवधारणा का स्थान 'क्रेता बाजार' की अवधारणा ले चुकी है। बढते हुए विश्व व्यापार और संरक्षण विरोधी नीतियो के फलस्वरूप आज उपभोक्ता के सामने अपनी आवश्यकता की वस्तुओ के क्रय करते समय बहुत -

UNIT - II

* प्रवर्तन का अर्थ [Meaning of Promotion] :

प्रवर्तन का अभिप्राय व्यावसायिक सुअवसरों की खोज, तत्पश्चात् उससे लाभ उठाने के लिए धन, सम्पत्ति और प्रबन्ध कुशलता को एक व्यावसायिक संस्था के रूप में संगठित करना है।"

प्रवर्तन किसी व्यावसायिक इकाई को जन्म देने की प्रक्रिया है जो व्यवसाय की स्थापना के विचार से प्रारम्भ होकर उसके औपचारिक शुभारम्भ तक चलती है।

* नवीन इकाई के प्रवर्तन की अवस्थाएँ :- प्रवर्तन से सम्बन्धित अवस्थाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

(I) स्थापना या प्रवर्तन से पूर्व की विचारणीय बातें :- नवीन इकाई की स्थापना या प्रवर्तन से पूर्व विचारणीय बातें निम्नलिखित हैं -

a) व्यवसाय की प्रकृति का चुनाव।
b) व्यवसाय के अवसर का प्रारम्भिक अनुसन्धान।
c) व्यावसायिक संगठन का स्वरूप।
d) पर्याप्त पूँजी।
e) स्थान का चुनाव।
f) फर्म तथा संयंत्र के आकार का निर्धारण।
g) आन्तरिक संगठन।
h) कार्यालय प्रबन्ध।
i) राजकीय नीति।

II) व्यावसायिक इकाई की स्थापना :-

A) व्यवसाय के वैधानिक स्वरूप का संगठन करना।
B) आवश्यक अनुमति, स्वीकृति, लाइसेंस आदि प्राप्त करना।
C) वित्त प्राप्त करना।
D) कर्मचारियों का चयन।
E) व्यवसाय को प्रारम्भ करना।

3. संचालन मे लचीलापन [flexibility of operations] :- एक अच्छा व्यावसायिक संगठन बिना किसी समस्या के इन परिवर्तनीय कारको के अनुसार स्वयं को समायोजित करने मे सक्षम होता है।

4. संरचना मे सरलता - एक आदर्श व्यावसायिक संगठन का सफलतापूर्वक गठन किया जा सकता है। इसकी स्थापना के लिए न्यूनतम धन एवं विधिक औपचारिकताओं की आवश्यकता होती है।

5. व्यावसायिक गोपनीयता → एकल व्यावसायिक संगठन मे पूर्ण व्यावसायिक गोपनीयता को बनाए रखा जा सकता है।

★ व्यावसायिक संगठन के उद्देश्य [Objectives of Business organisation]

1. व्यवसाय की दक्षता मे वृद्धि करना।
2. विभिन्न विभागों के मध्य समन्वय स्थापित करना।
3. न्यूनतम व्यय पर अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना।
4. उपभोक्ताओ को संतुष्ट करना।
5. सामाजिक उत्तरदायित्व पर ध्यान केन्द्रित करना।
6. रोजगार के अवसर उत्पन्न करना।
7. कर्मचारी कल्याण की स्थापना एवं रखरखाव।
8. देश के प्राकृतिक संसाधनो के अनुकूलतम उपयोग करना।

★ व्यवसाय एवं पेशा [Business and Profession] :-

एक व्यवसाय जिसमे विशेषज्ञ तथा विशिष्ट व्यक्तिगत सेवाओ की आपुर्ति शामिल है, उसको पेशे के रूप मे परिभाषित किया जाता है। यह एक प्रकार का कार्य है जिसके लिए पेशेवर ज्ञान, प्रशिक्षण तथा औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। उदाहरण - वकील, डॉक्टर आदि।

★ एकाकी व्यवसाय के गुण अथवा लाभ :-

1. स्थापना मे आसानी होती है।
2. तत्पर एवं शीघ्र निर्णय लिये जाते है।
3. व्यक्तिगत देखरेख।
4. समन्वय की सुविधा।
5. प्रत्यक्ष प्रेरणा एवं कार्य करने का उत्साह।
6. गोपनीयता बनी रहती है।

★ एकाकी व्यवसाय के अवगुण अथवा सीमाएँ।

1. सीमित पूँजी
2. असीमित दायित्व
3. सीमित प्रबन्धकीय योग्यता
4. अस्थायी दायित्व
5. उतावले निर्णय
6. सीमित ख्याति

★ साझेदारी (Partnership) :-

साझेदारी दो या दो से अधिक व्यक्तियो का एक ऐसा समूह अथवा संगठन है। जिसकी स्थापना स्वेच्छा से किसी वैध कारोबार से लाभ कमाने एवं उस लाभ को पारस्परिक समझौते के अनुसार आपस मे बाँटने के लिये की जाती है। जो लोग ऐसा व्यवसाय चलाने का समझौता करते है, उन्हे साझेदार कहते है।

★ साझेदारी के आवश्यक लक्षण अथवा विशेषताएँ

1. दो या दो से अधिक व्यक्ति।
2. साझेदारी के बीच ठहराव अथवा अनुबन्ध।
3. व्यवसाय
4. व्यवसाय का उद्देश्य लाभ कमाना अथवा आपस मे विभाजन करना।
5. व्यवसाय का संचालन सभी साझेदारो द्वारा अथवा उनमे से किन्ही के द्वारा होना चाहिए।

✱ व्यावसायिक संगठन के प्रारूप [forms of Business organisation]

- निजी क्षेत्र वाले व्यावसायिक संगठन।
  - A) अनियमित क्षेत्र
    - i) एकाकी व्यापार
    - ii) साझेदारी
    - iii) संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय
    - iv) संयुक्त उपक्रम
  - B) नियमित क्षेत्र
    - i) प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी
    - ii) पब्लिक लिमिटेड कम्पनी
    - iii) सहकारी समिति
- सरकारी क्षेत्र वाले व्यावसायिक संगठन।
  - i) विभागीय उपक्रम
  - ii) सार्वजनिक निगम
  - iii) सरकारी कम्पनी।

✱ एकाकी व्यापार अथवा एकाकी स्वामित्व [Sole Proprietorship] :-

एकाकी व्यवसाय के अन्तर्गत एक व्यक्ति ही समस्त व्यवसाय का संगठन करता है, वही उसका स्वामी होता है एंव अपने ही नाम से व्यवसाय का संचालन करता है।

✱ एकाकी व्यवसाय की विशेषताएँ अथवा लक्षण :-

1. एकाकी स्वामित्व - व्यवसाय का स्वामित्व केवल एक ही व्यक्ति के पास होता है।
2. व्यवसाय पर सम्पूर्ण नियंत्रण रहता है।
3. असीमित दायित्व - एकाकी व्यापार व्यवसायी का दायित्व उसके द्वारा व्यवसाय मे विनियोजित पूँजी तक ही सीमित नही होता अपितु उसकी निजि सम्पत्ति तक विस्तृत होता है।
4. व्यवसाय तथा व्यवसायी मे कोई अन्तर नही होता।
5. सम्पूर्ण लाभ स्वामी का होता है।
6. पूँजी पर एकाधिपत्य होता है।
7. कार्यक्षेत्र की निर्धारित सीमा होती है।

6. फर्म एवं सदस्यों का अस्तित्व अलग न होना।
7. असीमित दायित्व।

* साझेदारी के गुण (Merits of partnership)

1. निर्माण मे सुविधा।
2. अधिक वित्तीय साधन।
3. योग्यताओं का एकत्रीकरण।
4. प्रत्यक्ष प्रेरणा।
5. व्यक्तिगत देखरेख।

* साझेदारी के दोष (Demerits of partnership)

1. असीमित दायित्व
2. सीमित साधन
3. आपसी मतभेद
4. अनिश्चित अस्तित्व
5. हित हस्तान्तरण पर रोक।

* सीमित दायित्व साझेदारी [Limited Liability partnership]

"सीमित दायित्व साझेदारी से आशय ऐसी साझेदारी से है जो इस अधिनियम के अधीन निर्मित एवं पंजीकृत है।"

सीमित दायित्व साझेदारी (LLP), सीमित दायित्व साझेदारी अधिनियम के अधीन निर्मित एवं समामेलित निगम निकाय है जिसका अपने साझेदारी से प्रथक अस्तित्व होता है, जिसे अविच्छिन्न उत्तराधिकार प्राप्त है तथा जिसका प्रबन्ध, सीमित दायित्व साझेदारी अनुबन्ध के अनुरूप होता है।

* सीमित दायित्व साझेदारी के लक्षण/विशेषताएँ -

1. समामेलित संस्था
2. प्रथक वैधानिक अस्तित्व
3. अविच्छिन्न/अविरत अस्तित्व
4. साझेदारों की संख्या

5. मनोनीत साझेदार
6. अंशदान / पूँजी
7. लाभ उद्देश्य से व्यवसाय।
8. अनुबन्ध द्वारा साझेदारी।

* सीमित दायित्व साझेदारी के गुण -

1. निर्माण मे तुलानात्मक रूप से सुगमता।
2. अविच्छिन्न अस्तित्व
3. साझेदारो को व्यवसाय के प्रबन्ध मे प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने का अधिकार
4. प्रबन्ध करने हेतू लचीलापन।
5. अधिक वित्तीय साधन।
6. सीमित दायित्व।

* सीमित दायित्व साझेदारी के दोष / सीमाएँ।

1. सीमित दायित्व साझेदारी का पंजीकरण करना अनिवार्य है। जिसमे धन एवं समय अधिक लगता है।
2. सीमित दायित्व साझेदारी कम्पनी की भाँति अंशो एवं ऋणपत्रो को निर्गमित करके धन एकत्रित नही कर सकती।
3. सीमित दायित्व के कारण इसकी साख सीमा कम हो जाती है।
4. अन्य साझेदारो की सहमति के बिना भी किसी साझेदारी द्वारा कर्म हेतू किये गये कार्य से LLP बाध्य होती है।
5. कुछ परिस्थितियो मे साझेदारी की निजी सम्पतियो पर भी LLP का दायित्व उत्पन्न हो सकता है।
6. कम्पनी की भाँति स्वामित्व एवं प्रबन्ध अलग-अलग नही होते।

* संयुक्त स्कन्ध कम्पनी [Joint Stock Company] :-

संयुक्त पूँजी कम्पनी व्यावसायिक संगठन का वह प्रारूप है। जिसका निर्माण लाभ के लिए कुछ व्यक्तियो द्वारा ऐच्छिक संस्था के रूप मे विधान के अन्तर्गत किया जाता है। इसकी पूँजी हस्तान्तरणीय अंशो मे विभक्त होती है। अंशो के स्वामी अंशधारी कहलाते है। अंशधारियो का दायित्व सीमित होता है। कम्पनी अपना कारोबार एक सार्वमुद्रा के अधीन चलती है।

* निजी कम्पनी की हानियाँ [Demerits of Private company]:-

1. लघु व्यवसायों को हानि।
2. व्यस्त कार्य वातावरण
3. नौकरी जाने का भय।
4. गला काट प्रतिस्पर्धा
5. सीमित कार्य के क्षेत्र।
6. भ्रष्टाचार।
7. लाभ पर अधिक ध्यान।

* सार्वजनिक कम्पनी [Public company]:-

कम्पनी अधिनियम 2013 के अनुच्छेद 2(71) परिभाषित किया गया है कि जो कंपनी निजी कम्पनी नहीं है वह सार्वजनिक कम्पनी है।

• ए एच० हैनसन के अनुसार, "सार्वजनिक उद्यमों का अर्थ है राज्य का स्वामित्व तथा औद्योगिक, कृषि, वित्तीय एवं वाणिज्यिक उपक्रमों का संचालन करना है।"

सार्वजनिक उपक्रम की विशेषताएँ / लक्षण :-

1. राज्य का स्वामित्व
2. राज्य नियंत्रण
3. जनता के प्रति उत्तरदायित्व
4. आवृत क्षेत्र
5. संसाधनों का पुनः आवटन
6. नीतियों का विकास
7. सेवाओं के प्रावधान।

* सार्वजनिक उपक्रम की समस्याएँ -

1. विस्तृत क्षेत्र एवं आवृत क्षेत्र।
2. संगठन एवं प्रबन्धन
3. स्थानांतरण उद्देश्य एवं भूमिकाएँ
4. कार्मिक प्रशासन
5. वित्तीय प्रबन्धन।

संयुक्त स्कन्ध कम्पनी के लक्षण / विशेषताएँ :-

1. अधिनियम द्वारा निर्मित कृत्रिम व्यक्ति।
2. अविच्छिन्न उत्तराधिकार।
3. सीमित दायित्व।
4. प्रथक वैधानिक आस्तित्व।
5. प्रतिनिधि प्रबन्ध।
6. सार्वमुद्रा का प्रयोग।
7. वाद प्रस्तुत करने का अधिकार।

★ निजी कम्पनी [Private company] :-

भारतीय कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2(68) के अनुसार "निजी कम्पनी का आशय एक ऐसी कम्पनी से है जो अपने अन्तर्नियमों द्वारा-

(i) अपने अंशों के हस्तान्तरण के अधिकार पर प्रतिबन्ध लगाती है।
(ii) अपने सदस्यों की संख्या को 200 तक सीमित रखती है।
(iii) अपने अंशों और ऋण-पत्रों के खरीदने के लिए जनसाधारण को आमन्त्रित नहीं करती।
(iv) निजी कम्पनी की स्थापना केवल 2 सदस्यों से हो सकती है।
(v) कम्पनी को अपने नाम के अन्त में 'प्राईवेट लिमिटेड' शब्द लिखना अनिवार्य है।

★ निजी कम्पनी की विशेषताएं या लक्षण :-

1. अंशों के हस्तान्तरण पर प्रतिबन्ध।
2. सदस्यों की अधिकतम संख्या 200 पर प्रतिबन्ध।
3. अंशों व ऋणपत्रों के क्रय के लिए जनता को आमन्त्रित न करना।
4. सदस्यों का दायित्व सीमित होता है।
5. प्राईवेट लिमिटेड शब्द का प्रयोग अनिवार्य है।
6. कम से कम दो संचालक।
7. जनता से जमाराशियाँ लेने पर प्रतिबन्ध।

आवश्यक पूँजी परस्पर उचित अनुपात मे एकत्रित करते है तथा व्यवसाय मे निहित जोखिम व उससे प्राप्त लाभ को परस्पर उचित अनुपात मे बाँटने के लिये सहमत होते है।"

* सहकारी स्वामित्व / संगठन से लाभ :-

अ) आर्थिक लाभ - (Economic Advantage)
1) वित्त प्राप्त करने मे सुविधा।
2) सीमित दायित्व।
3) मध्यस्थो की समाप्ति।
4) माँग व पुर्ति मे सन्तुलन।
5). लाभ का न्यायोचित वितरण।

ब) सामाजिक लाभ -(Social Advantage)
1) सहकारी और प्रजातन्त्र की भावना की प्रोत्साहन
2) आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीयकरण
3) व्यावसायिक अनुभव
4) कमजोर तथा निर्धन लोगो की सहायता
5) अप्रत्यक्ष लाभ।

* सहकारी संगठन के दोष :-
1. अकुशल प्रबन्ध
2. प्रत्यक्ष प्रेरणा का अभाव।
3. पूँजी की कमी।
4. सीमित आकार।
5. गोपनीयता का अभाव।
6. आपसी मतभेद।

INSTITUTE OF MANAGEMENT ... BULANDSHAHR

* एक व्यक्ति कम्पनी [One Person company] :-

कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2(62) के अनुसार, "एक व्यक्ति कम्पनी से आशय ऐसी कम्पनी से है जिसका कोई एक व्यक्ति ही सदस्य होता है।"

एक व्यक्ति कम्पनी के निर्माण सम्बन्धी प्रावधान -

1. एक सदस्य द्वारा निर्माण
2. भारतीय नागरिक तथा भारत में निवासी व्यक्ति / एकाकी व्यक्ति द्वारा सम्मेलन
3. निजी कम्पनी के रूप में सम्मेलन
4. एक ही अभिदाता।
5. अभिदाता का नामांकन INC-2 में किया जायेगा।
6. केवल एक ही कम्पनी में नामांकन
7. नामांकिती द्वारा सदस्य बनना तथा नामांकन करना।
8. पंजीयन
9. संचालक की न्यूनतम संख्या 1 तथा अधिकतम 15 संचालक नियुक्त किये जा सकते हैं।

* एक व्यक्ति कम्पनी के लाभ [Advantages of one person company]

1. कम्पनी निर्माण के लिए एक ही व्यक्ति की आवश्यकता
2. पृथक अस्तित्व
3. अविच्छिन्न उत्तराधिकार
4. सीमित दायित्व
5. गोपनीयता।

* एक व्यक्ति कम्पनी के दोष / सीमाएँ -

1. अनेक वैधानिक औपचारिकताओं का पालन
2. निर्माण में भारी लागत
3. प्रबन्धकीय / संचालक की अधिक लागत।
4. ऊँची दर से कराधान।
5. सीमित वित्तीय साधन।
6. सीमित कार्यक्षेत्र।

* सहकारी संगठन [Co-operative organisation]

सहकारी समिति उन व्यक्तियों का एक संगठन है जिनके साधन प्रायः सीमित होते हैं जो लोकतान्त्रात्मक ढंग से नियन्त्रित, व्यावसायिक संगठन की स्थापना करके समान आर्थिक लक्ष्य की उपलब्धि के लिये स्वेच्छा से सम्मिलित होते हैं,

2) विशेष इलाके या समुदाय का चयन :-

i) श्रम का पूर्ति

ii) सामुदायिक सुविधाएँ

iii) सामुदायिक मनोवृत्तियाँ

iv) राजकीय नियमन एवं सहायता

v) वित्त एवं साख - सुविधाएँ।

3) समुदाय विशेष मे निश्चित स्थान का चुनाव अथवा संयन्त्र के लिए निश्चित स्थान का चयन -

i) भूमि की लागत एवं विकास व्यय।

ii) संयन्त्र के विस्तार की सुविधा।

iii) व्यर्थ पदार्थों के फिकवाने की सुविधा।

iv) स्टाफ तथा श्रमिको को पहुचाने मे सुविधा।

★ अल्फ्रेड वेबर का औद्योगिक स्थानीयकरण का सिद्धान्त :-
(Alfred weber's Theory of Industrial Location)

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन श्री वेबर द्वारा सन् 1909 मे जर्मन भाषा मे किया गया। अल्फ्रेड वेबर ने अपने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन औद्योगिक स्थानीयकरण के विभिन्न कारकों का पूर्ण अन्वेषण तथा विश्लेषण करके उनके आधार पर किया। उनके द्वारा यह ज्ञात किया गया कि लागत के कुछ मूल तत्व अलग-अलग स्थानो पर समान नही होते है। प्रथम वर्ग के लागत तत्वो का ही उद्योगो के स्थानीयकरण पर सर्वाधिक प्रभाव पडता है। इस प्रकार लागत विश्लेषण के आधार पर श्री वेबर के स्थानीयकरण के सिद्धान्त की वैज्ञानिक विवेचना की।

★ वेबर के सिद्धान्त की मान्यताएँ —

1. परिवहन व्यय समान दर से वसूल किया जाता है।
2. उपभोग के केन्द्र स्थिर है तथा श्रम की पूर्ति के केन्द्र भी स्थिर है।
3. कच्चे माल को प्राप्त करने की लागत समान है यद्यपि उसका वितरण असमान है।

उपरोक्त मान्यताओ के कारण वेबर के सिद्धान्त को 'समान विश्लेषण का सिद्धान्त' भी कहा जाता है।

* संयंत्र स्थान निर्धारण [Plant Location] :-

औद्योगिक स्थानीयकरण (Industrial Localisation) जब एक ही प्रकार की औद्योगिक इकाइयाँ अनुकूल परिस्थितियों के कारण किसी विशेष स्थान पर केन्द्रीत होने की प्रवृत्ति रखती है तो उसे औद्योगिक स्थानीयकरण, औद्योगिक केन्द्रीयकरण आदि नामों से पुकारा जाता है। उदाहरण - भारत मे सूती वस्त्र उद्योग मुम्बई तथा अहमदाबाद मे जूट उद्योग।

संयंत्र स्थान निर्धारण [Plant Location] - संयंत्र स्थान निर्धारण से आशय किसी एक औद्योगिक इकाई के किसी एक स्थान विशेष पर स्थापित होने से है।

* संयंत्र स्थान को निर्धारित करने वाले घटक :-

किसी भी औद्योगिक इकाई की सफलता अथवा विफलता पर्याप्त सीमा तक उसके उचित स्थान पर स्थापित किए जाने पर निर्भर करती है। अतएव यह आवश्यक है कि निर्णय लेने से पूर्व स्थान सम्बन्धी समीसमस्याओं तथा तथ्यों पर भली-भाँति विचार कर लिया जाए।

किसी भी औद्योगिक इकाई की स्थापना के लिए उपयुक्त स्थान का चयन करते समय निम्नलिखित प्रमुख निर्णय लेने होते है -

i) किसी विशिष्ट क्षेत्र अथवा प्रदेश मे संयंत्र स्थापित किया जाए ?

ii) चयनित क्षेत्र के किस समुदाय या विशेष इलाके मे संयंत्र स्थापित किया जाए?

iii) उक्त समुदाय या इलाके मे किस स्थान विशेष पर संयंत्र स्थापित किए जाए?

1) संयंत्र के क्षेत्र का चयन :-

i) कच्चे माल की उपलब्धता।

ii) शक्ति के साधनो की समीपता।

iii) बाजार की निकटता व सुलभता।

iv) परिवहन सुविधाएँ।

v) जलवायु की अनुकूलता।

BULANDSHAHR ... INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY

ब) विकेन्द्रीकरण वाले घटक - ऐसे घटक जो उद्योगो को एक निश्चित क्षेत्र मे विकेन्द्रीत करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करते हो उन्हे विकेन्द्रीकरण वाले घटक कहा जाता है।

★ संयंत्र अभिन्यास [Plant Layout] :-

संयंत्र अभिन्यास दो शब्दो से मिलकर बना है- संयंत्र और अभिन्यास। अतः इन दोनो शब्दो की अलग-अलग व्याख्या करके 'संयंत्र अभिन्यास' का अर्थ अधिक स्पष्टता के साथ समझा जा सकता है।

संयन्त्र अभिन्यास का तात्पर्य उपयुक्त साज-सज्जा को उपयुक्त स्थान पर स्थापित करना है, जिससे कि वस्तुओ का उत्पादन अधिक प्रभावशाली ढंग से किया जा सके।

⇒ संयन्त्र अभिन्यास के लक्षण अथवा विशेषताएँ -

1. संयन्त्र अभिन्यास एक नियोजन है जिसके द्वारा उपलब्ध स्थान का अनुकूलतम उपयोग किया जाता है।
2. इसके अन्तर्गत उत्पादन प्रक्रिया मे काम मे आने वाले यन्त्रो, उपकरणो तथा सेवाओ को सही स्थान पर स्थापित किया जाता है।
3. गतिशील एंव निरन्तर प्रक्रिया।
4. वास्तविक या भावी स्वरूप को प्रदर्शित करता है।
5. विवेकपूर्ण योजना एक तकनीक।
6. अनावश्यक क्रियाओ पर प्रभावी रोक।

★ संयन्त्र अभिन्यास के उद्देश्य :-

1. उत्पादन लागतो को न्यूनतम करना।
2. कर्मचारियो की सुरक्षा मे वृद्धि करना।
3. उत्पादन की किस्म को श्रेष्ठतम बनाना।
4. ग्राहको को श्रेष्ठ सुविधाएँ प्रदान करनी।
5. पूँजीगत विनियोग को कम करना।
6. सामग्री की क्षति को न्यूनतम करना।

★ संयन्त्र अभिन्यास के सिद्धान्त [Principles of Plant Layout]

1. सामान्य एकीकरण का सिद्धान्त।
2. न्यूनतम दूरी का सिद्धान्त।
3. प्रवाह का सिद्धान्त

वेबर के सिद्धान्त के प्रमुख भाग :- Main Parts of Weber's Theory

1. शुद्ध सिद्धान्त - इस भाग के अन्तर्गत औद्योगिक स्थानीयकरण का सैद्धान्तिक विवरण प्रस्तुत किया गया है जो विश्लेषणात्मक क्रियाओं की पृष्ठभूमि माना जाता है।
2. व्यावहारिक सिद्धान्त - यह भाग स्थानीयकरण के व्यावहारिक सिद्धान्त से सम्बन्धित है, परन्तु इसका प्रकाशन अभी तक नहीं हो सका है।

* स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाले घटक [factors affecting Location] :-

I. प्रमुख या क्षेत्रीय घटक - वे समस्त कारण जो उद्योगों के क्षेत्रीय विवरण को प्रभावित करते हैं, उन्हें प्रमुख घटक कहते हैं। जैसे - परिवहन लागत, श्रम लागत।

अ) परिवहन लागत - प्रत्येक उद्योग में कच्ची सामग्री को कारखाने तक लाने तथा तैयार माल को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए परिवहन लागत वहन करनी पड़ती है। परिवहन लागत निम्नलिखित दो बातों पर निर्भर करती है -
1. यातायात किये गये माल का भार,
2. परिवहन दूरी।

इसके साथ ही परिवहन लागत बहुत कुछ कच्चे माल की प्रकृति एवं निर्माणी प्रक्रिया पर भी निर्भर करती है। वेबर ने कच्चे माल को परिवहन लागत का प्रमुख घटक माना है।

ब) श्रम लागत - श्रम लागत भी औद्योगिक स्थानीयकरण को प्रभावित करती है। कुछ क्षेत्रों में श्रम सस्ती दरों पर उपलब्ध हो जाता है। श्रम केन्द्रों पर उद्योगों का स्थानीयकरण निम्नलिखित दो बातों पर निर्भर करता है -
1. श्रम लागत निर्देशांक - श्रम लागत निर्देशांक से तात्पर्य श्रम लागत तथा निर्मित माल के भार के बीच अनुपात से है -

$$\text{श्रम लागत निर्देशांक} = \frac{\text{श्रम लागत}}{\text{निर्मित माल का भार}}$$

2. स्थानीयकरण भार - उत्पादन कार्य की सम्पूर्ण प्रक्रिया में परिवहन किया जाने वाला कुल भार स्थानीयकरण भार कहलाता है। श्रम लागत एवं स्थानीयकरण भार के अनुपात को श्रम गुणांक कहेंगे।

II) सहायक घटक - इन सहायक घटकों को केन्द्रीयकरण तथा विकेन्द्रीकरण के घटकों के नाम से भी पुकारा जाता है।

क) केन्द्रीयकरण वाले घटक - ऐसे घटक जो उद्योगों को किसी क्षेत्र विशेष में केन्द्रित करते हैं, केन्द्रीयकरण वाले घटक कहलाते हैं।

4. अर्द्ध निर्मित माल की मात्रा मे कमी।
5. निरीक्षण एव नियन्त्रण।
6. कुल उत्पादन लागत मे कमी

⇒ उत्पाद अभिन्यास के दोष :-

1. लोच का अभाव
2. अधिक विनियोग की आवश्यकता
3. मशीनों का अधिकतम उपयोग सम्भव नहीं।
4. उत्पादन अवरोध की सम्भावनाओ मे वृद्धि।
5. श्रमिको मे नीरसता।
6. जॉब या बैच उत्पादन के लिए अनुपयुक्त।

★ व्यावसायिक इकाई के आकार की माप [Measure of Size of Business Unit]

किसी व्यावसायिक इकाई के आकार को मापने के लिए तथा दो यादो से अधिक इकाइयो के आकार मे तुलना करने के लिए अनेक विधियो का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक विधि को प्रयोग करने की परिस्थितियों एव सीमाओ का वर्णन अग्रलिखित है-

1. विनियोजित पूँजी
2. उत्पादन की मात्रा
3. उत्पादन का मूल्य
4. श्रमिको की सख्या
5. भुगतान की गई मजदूरी की मात्रा
6. प्रबन्धकीय कार्य - व्यवस्था की जटिलता
7. शक्ति की मात्रा

★ आकार को प्रभावित करने वाले कारक :-

1. तकनीकी कारक
2. प्रबन्धकीय कारक
3. वित्तीय कारक
4. विपणन कारक

★ फर्म का आकार निर्धारित करने वाले कारक

1. पूँजी निवेश कारक
2. कर्मचारियो की संख्या
3. अधिकार / शक्ति का उपयोग
4. कच्चे माल का उपयोग

4. घन क्षेत्र का सिद्धान्त।
5. सन्तुष्टि व सुरक्षा का सिद्धान्त।
6. लोच का सिद्धान्त।

⇒ संयन्त्र अभिन्यास की कार्यविधि [Procedure for Plant Layout]

1. उद्देश्यों का निर्धारण तथा आवश्यक जानकारी का संकलन।
2. समंकों का विश्लेषण एवं समन्वय।
3. अभिन्यास योजना का निर्धारण।
4. कार्य-स्थल एवं भवन का डिजाइन।
5. तकनीक का विकास।
6. सम्बन्धित व्यक्तियों को आवश्यक जानकारी।

★ रेखागत अथवा उत्पाद अभिन्यास [Line or Product Layout]

यह एक ऐसी संयन्त्र अभिन्यास योजना है, जिसके अन्तर्गत मशीनों एवं उपकरणों को उत्पादन प्रक्रिया के अन्तर्गत उनके उपयोग के क्रम में स्थापित किया जाता है।

'उत्पाद अभिन्यास से अभिप्राय प्रक्रियाओं को एक क्रम से निष्पादित किया जाना है एवं उत्पाद को आवश्यकतानुसार जोड़ा एवं तैयार किया जाना है।" जैसे - भण्डार कक्ष तथा यन्त्र कक्ष।

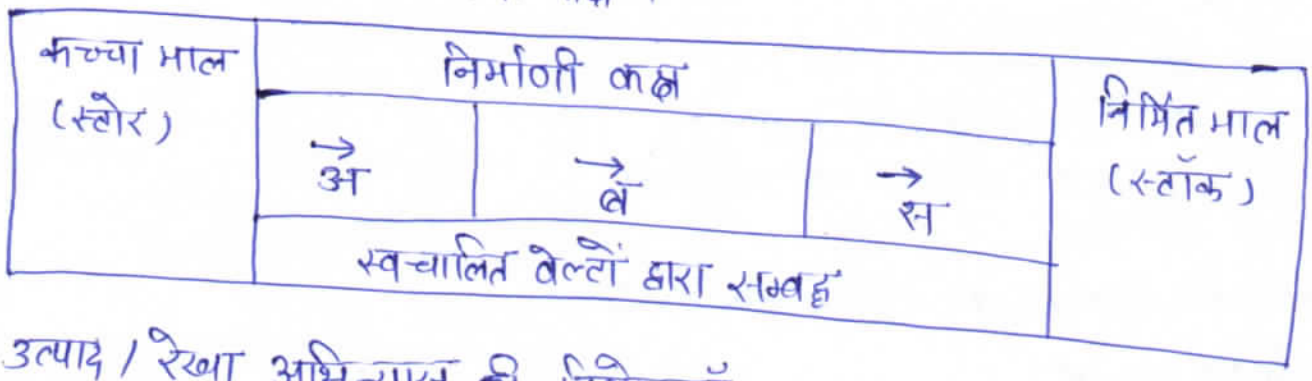

⇒ उत्पाद / रेखा अभिन्यास की विशेषताएँ -

1. प्रक्रिया का क्रम स्थायी रूप से निर्धारित रहता है।
2. निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया।
3. यन्त्रों एवं उपकरणों को उत्पादन प्रक्रिया के उपयोग के क्रम में
4. सभी प्रक्रियाएँ एक साथ एवं लगातार चलती रहती हैं।
5. माल भावी माँग पर ध्यान देते हुए तैयार किया जाता है।

★ उत्पाद अभिन्यास के लाभ -

1. आन्तरिक परिवहन में लगने वाले समय तथा लागतों में कमी।
2. उत्पादन तीव्र गति से होता है।
3. कम स्थान की आवश्यकता।

5. उत्पादन की मात्रा
6. संयंत्र की क्षमता
7. आउटपुट का मूल्य

* आन्तरिक अर्थव्यवस्थाएँ की बड़े स्तर की इकाइयों के लिए उपलब्धता :-

1. वास्तविक अर्थव्यवस्थाएँ - वास्तविक अर्थव्यवस्थाएँ कच्चे सामग्री, इनपुट, पूंजी, श्रम आदि की कम मात्रा से सम्बन्धित है।

i) तकनीकी अर्थव्यवस्थाएँ -

a) आयाम / परिणाम की अर्थव्यवस्था
b) सम्मिलित प्रक्रिया की अर्थव्यवस्थाएँ
c) उत्पाद द्वारा उपयोग की गई अर्थव्यवस्था

ii) विपणन अर्थव्यवस्थाएँ - विपणन अर्थव्यवस्थाओं में वितरकों की नियुक्ति, शोरूम की स्थापना, विज्ञापन अर्थव्यवस्थाएँ आदि को शामिल किया जाता है।

iii) प्रबन्धकीय अर्थव्यवस्थाएँ - बड़े स्तर पर व्यावसायिक इकाइयों के उचित प्रबन्धन के साथ-साथ प्रबन्धकीय लागतों प्रबन्धकीय अर्थव्यवस्थाओं में परिणाम होता है।

iv) परिवहन एंव भण्डारण की अर्थव्यवस्थाएँ - भण्डारण और परिवहन की अर्थव्यवस्थाओं का उपयोग उन कम्पनियों द्वारा किया जाता है।

2. वित्तीय अर्थव्यवस्थाएँ :- एक बड़ी व्यावसायिक इकाई उत्पादन और वितरण के कारकों के लिए कम भुगतान करने पर इस अर्थव्यवस्था का उपयोग किया जाता है।

iv) उत्पादन एवं प्रबन्धकीय अपव्ययों मे कमी करना।
v) बड़े पैमाने के उत्पादन के लाभ प्राप्त करना।
vi) उद्योग मे विवेकीकरण एवं आधुनिकीकरण की योजना लागू करना।

* संयोजनो के प्रकार [Types of Combinations]:-

1.) क्षैतिज या समतल संयोजन [Horizontal Combination]
जब एक ही उद्योग मे लगी हुई तथा एक ही प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करने वाली या एक ही व्यवसाय मे लगी हुई दो या दो से अधिक इकाइयाँ आपस मे मिलकर संयोजन स्थापना करती है तो उसे क्षैतिज या समतल, समानान्तर या व्यावसायिक संयोजन कहते है। भारत मे सीमेंट उद्योग मे एसोसिएटेड सीमेंट कम्पनी लिमिटेड, जूट उद्योग मे जूट एसोसिएशन, चीनी उद्योग मे सिण्डीकेट शुगर आदि इसके प्रमुख उदहारण है।

2.) उदग्र, शीर्ष या लम्बवत् संयोजन [Vertical Combination]:-
कुछ उद्योगो मे कच्चा माल कई विशिष्ट प्रक्रियाओ से गुजरकर अन्तिम उत्पादन का रूप ग्रहण करता है। ऐसे उद्योगो मे उत्पादन की प्रारम्भिक अवस्था से लेकर अन्तिम अवस्था तक आने वाली विभिन्न क्रियाओं मे संलग्न इकाइयो को आपस मे मिला देने से जो रूप तैयार होता है, उसे उदग्र, शीर्ष या लम्बवत् संयोजन कहा जाता है।

⇒ उदग्र संयोजन के भेद:-

i) अग्रगामी संयोजन - जब संयोजन किसी अगली क्रिया करने तथा निर्मित माल को बाजार मे बेचने के लिए किया जाता है तो इसे अग्रगामी संयोजन कहते है। उदहारण - कपड़ा बनाने वाली इकाईयें सिले-सिलाए वस्त्र तैयार करने वाली एवं सिले - सिलाए वस्त्रो को बेचने वाली इकाइयो के साथ संयोजन करती है।

ii) प्रतिगामी संयोजन :- जब संयोजन की स्थापना किसी पहली क्रिया करने अथवा कच्चे माल को उत्पादित करने वाली इकाई के साथ की जाती है तो इसे प्रतिगामी संयोजन कहते है। उदहारण - यदि कपड़ा बनाने वाली इकाई कपास उगाने, कपास की ओटाई करने, सूत कातने वाली इकाइयो के साथ संयोजन करती है।

★ व्यावसायिक संयोजन [Business combination]

व्यावसायिक संयोजन का अर्थ समझने के लिए, 'संयोजन' शब्द का अर्थ स्पष्ट कर लेना आवश्यक है।

संयोजन का अर्थ सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यक्तियों, कम्पनियों या राज्यों का सहयोगपूर्ण सम्बन्ध है।

⇒ व्यावसायिक संयोजन के लक्षण अथवा विशेषताऐं -

1. संयोजन किसी व्यवसाय मे लगी दो या दो से अधिक इकाइयो का एक संघ है।
2. संयोजन की स्थापना किसी सामान्य उद्देश्य की पुर्ति हेतू की जाती है।
3. संयोजन रूपी संघ का संयोजन बनाने वाली इकाइयो पर आंशिक अथवा पूर्ण नियन्त्रण रहता है।
4. संयोजित होने वाली इकाइयाँ अपना प्रथक अस्तित्व बनाये भी रख सकती है अथवा समाप्त भी कर सकती है।
5. संयोजन औपचारिक अथवा अनौपचारिक किसी भी प्रकार का हो सकता है।

★ संयोजन आन्दोलन के आधार अथवा कारण अथवा घटक :-

1. प्रमुख कारण [Primary Causes] :-
   a) गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा
   b) व्यापार चक्र
   c) बडे पैमाने की मितव्ययिताएँ

2.) सहायक कारण (secondary Causes] :-
   a) एकाधिकार प्राप्त करने की अभिलाषा
   b) तकनीकी प्रगति
   c) सरकारी नीति
   d) यातायात एंव संदेशवाहन के साधनो मे विकास
   e) उत्पादन प्रक्रियाओं मे समन्वय

★ संयोजन के उद्देश्य [Objects of Combination] :-

I) गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा को समाप्त करना।

II) व्यावसायिक या औद्योगिक इकाइयो मे परस्पर सहयोग एंव सहकारिता की भावना का विकास करना।

III) उत्पादन के साधनो का सर्वोत्तम एंव कुशलतम उपयोग करना।

BULANDSHAHR ... MANAGEMENT & TECHNOLOGY

⇒ विवेकीकरण के उद्देश्य [Objects of Rationalisation]

1. सभी प्रकार के अपव्ययों की समाप्ति
2. उत्पत्ति के साधनो का श्रेष्ठ प्रयोग
3. न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन
4. सर्वश्रेष्ठ उत्पादन
5. औद्योगिक स्थिरता मे वृद्धि
6. समाज के जीवन स्तर मे वृद्धि
7. लाभों का न्यायपूर्ण वितरण।

★ विवेकीकरण का सिद्धान्त [Principle of Rationalisation]

1. तकनीकी सिद्धान्त :-

a) मानकीकरण
b) मशीनीकरण
c) गहनता
d) सरलीकरण
e) आधुनिकीकरण

2. संगठनात्मक सिद्धान्त :-

a) औद्योगिक संयोजन
b) आपुर्ति एवं माँग का मिलान
c) नई इकाइयो के प्रवेश पर नियन्त्रण
d) राष्ट्रीयकरण

3) वित्तीय सिद्धान्त :-

i) वित्तीय नियोजन
ii) पूँजी संरचना
iii) वित्तीय नियन्त्रण

4) सामाजिक एवं मानवीय सिद्धान्त :-

a) औद्योगिक सम्बन्ध
b) सामाजिक कल्याण
c) राष्ट्रीय हित

3.) वृत्तीय या चक्रीय संयोजन [Circular combination] :-
इसके अन्तर्गत अनेक संस्थाएँ जो भिन्न-2 उद्योगो मे लगी होती है और भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओ का निर्माण कर रही हैं, एक केन्द्रीय संगठन मे मिल जाती है। इस प्रकार के संयोजन का मुख्य उद्देश्य केन्द्रीय प्रशासन एव नियन्त्रण सम्बन्धी लाभ उठाना होता है। इसे मिश्रित संयोजन भी कहा जाता है। उदहारण - भारत मे टाटा, बिडला, डालमिया, जे०के० आदि।

4. विकर्णीय संयोजन [Diagonal combination] :-
इस संयोजन का अर्थ ऐसे संयोजन से है जिसमे प्रमुख औद्योगिक इकाई अपने साथ कुछ ऐसी गौण तथा सहायक औद्योगिक इकाइयो को मिला लेती है जो उसे सहायक पदार्थ या सेवा उपलब्ध कराती है। उदहारण - लोहा व इस्पात कारखाने के साथ शक्ति गृह।

5. पार्श्व संयोजन [Lateral or Allied combination] :-
इसे सम्बद्ध संयोजन भी कहते है। इस प्रकार के संयोजन मे भिन्न-2 संस्थाए जो अलग-अलग किस्म की लेकिन एक-दूसरे की सहायक वस्तुओ का उत्पादन करती है, एक संगठन के अधीन मिल जाती है।

★ विवेकीकरण [Rationalisation] :-
विवेकीकरण से आशय परम्परागत और अव्यवस्थित पद्धतियो के स्थान पर वैज्ञानिक और युक्तिपूर्ण पद्धतियो के प्रयोग द्वारा अपव्ययो को समाप्त करके न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन करते हुए उद्योग का सर्वांगीण विकास करना है। यह ध्यान देने योग्य है कि इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत इकाई की अपेक्षा सामूहिक रूप से एक उद्योग की समस्त इकाइयो के सुधार का दृष्टिकोण अपनाया जाता है अर्थात विवेकीकरण का दृष्टिकोण उद्योगव्यापी है।

⇒ विवेकीकरण की विशेषताएँ :-
1. सामूहिक दृष्टिकोण
2. व्यापक प्रक्रिया
3. तार्किक एव विवेकपूर्ण विधि का प्रयोग
4. औद्योगिक अनुसन्धान पर बल
5. सम्पूर्ण समाज के हित का दृष्टिकोण